जाच करनी चाहिए। खास तौर से हरियाणा और उत्तर प्रदेश का जो सरप्लस पानी कामा की ओर से या कामा झील की तरफ से राजस्थान मे आ जाता है, उसके कारण राजस्थान के इन क्षेत्रों मे बार-बार बाढ आती है। पहले भी भरतपुर मे बाढ आई थी और इसी प्रकार लाखो रुपये का नुकसान हुआ था। अभी भी बहुत बाढ़ आई हुई है और उसके कारण लाखो रुपये का नुकसान हुआ है। इस समय राहत की दृष्टि से सारा इलाका जो बाढ़ से घिर गया गया है, वहा लोगों के लिए अनाज की खाने की चीजो की एयर ड्रापिंग यह सब सेना को सौपा गया है, लेकिन लोगों को तात्कालिक राहत देने की दृष्टि से सरकार की ओर से घोषणा नही हुई है। एक तो इस क्षेत्र मे जो बार-बार बाढ़ आती है उसके लिए हरियाणा और उत्तर प्रदेश की सरकारो से मिल करके कोई केन्द्रीय योजना बनाने में केन्द्रीय सरकार असफल रही है और उसके कारण राजस्थान के कामा, भरतपुर और बयाना क्षेत्र बार-बार बाढ़ से प्रभावित होते है। तो मैं मंत्री महोदय से निवेदन करूगा कि इस प्रकार कि वे कौन सी योजना बना रहे है इसके बारे मे वे सदन को परिचित कराये, दूसरे तात्कालिक राहत की दृष्टि से भरतपुर जिले मे जो बाढ़ आई हुई है, उसके लिए कौन से प्रयत्न किये जा रहे है, इसके बारे मे भी वे सदन को सूचित करने की कृपा करे।

MR. DEPUTY CHAIRMAN : The House stands adjourned till 2.15 P.M.

The House then adjourned for lunch at twenty-eight minutes past one of the clock.

The house reassembled after lunch at fifteen minutes past two of the clock. MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.

THE VICTORIA MEMORIAL (AMENDMENT) BILL, 1972

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S. NURUL HASAN) : Mr. Deputy Chairman, I beg to move :

"That the Bill further to amend the Victoria Memorial Act, 1903, be taken into consideration."

This is a very simple matter. The hon. House is aware of the circumstances in which this Act was enacted originally, but what has happened is that it has now developed into a period museum of considerable significance, and the Estimates Committee of Parliament had suggested measures to bring about certain improvements, and in accordance with the broad wishes expressed, by the Estimates Committee the following schemes have been included in the Fourth Plan for implementation :

(1) Improvement of the Library.

(2) Setting of a Conservation Unit.

(3) Development Schemes suggested by the Estimates Committee :

(a) display of objects ;

(b) procurement of scientific equipment for preservation including Cellulos acetate papers;

(c) research fellowship.

(4) Preparation of standardised stock register and classified catalogues.

(5) Publication of guide books.

Some money has already been provided in the Budget in the current year and more will be allocated during the balance of the fourth plan, It was felt that in the manner this Act was originally conceived of no qualifications were provided for the membership of the Board of Trustees. And this very short Bill says that the two persons who are nominated by the Central Government will now be those who, in the opinion of the Central Government, have expert knowledge of the exhilits in the victorial memoriol or are museologists, historians or art historians.

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव (बिहार) : इतना बड़ा क्या है ? चेयरमैन के क्वालिफिकेशन की जरूरत ही नही।

प्रो० एस० नुरुल हसन : यादव जी, मैं क्या कहूं आपसे।

श्री उपसभापति : आप बोलते जाइये, वह तो बोलते ही रहेंगे।

प्रो० एस० नुरुल हसन : माननीय सदस्य की मैं बहुत इज्जत करता हूं, इसलिये मैं यह समझता हूं कि इनको जरा अहसास जिम्मेदारी होगी, वह तकरीर करेंगे, बड़ी खुशी से करे, जितनी बातें करनी हो करे, मैं इसलिए हाजिर हुआ हू कि बैठ कर उसे सुनूं और उससे फायदा उठाऊं, जो आपको तकरीर करनी है।

Similarly, the trustees were supposed to nominate from time to time persons who are supposed to represent the general body of subscribers. There also the amendment Bill seeks to provide that they must have expert knowledge of the exhibits in the Victoria Memorial or are museologists, historians or art historians. That is to say for the two categories of nominees, whether, they are the nominees of the Central Government or of the trustees themselves, this qualification has been added. There is another point about which I have just received an amendment. I would not like to say very much about it. But I would explain that it was not thought very suitable that the President's name may be associated with a trust of this nature. Therefore, instead of keeping the name of the President, the President's Constitutional Adviser has been put, to be the Chairman of the Board of Trusttees. This would require certai consequential amendment of the rules which, if this Bill is passed by the two Houses and it receives the President's assent, will be taken up.

The question was proposed.

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, उपसभापति महोदय, मैंने कुछ संशोधन दिये थे। शुरू-शुरू मे जहा "भारत गणराज्य के 23वें वर्ष में संसद् द्वारा" है वहा 23वे वर्ष की जगह हमने कहा था कि रजत-जयन्ती वर्ष रखा जाये। सरकार इस साल रजत-जयन्ती वर्ष मना रही है और यह एक संग्रहालय का संशोधन विधेयक है, इसलिये रजत-जयन्ती वर्ष रखना उपयुक्त था। पता नही कि इसको स्वीकार करने की बात हुई कि नहीं।

प्रो० एस० नुरुल हसन : जरा माननीय सदस्य समझा दें कि प्रेसाइज क्या वह है, समझ मे नही आया कि क्या माननीय सदस्य चाहते हैं।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : मैं यह चाहता था कि शुरू मे जो "भारत गणराज्य के 23वें वर्ष में संसद् द्वारा निम्नलिखित रूप मे यह अधिनियमित हो" है तो 23वे वर्ष की जगह मे रजत-जयन्ती वर्ष करना चाहिये; क्योंकि रजत-जयन्ती के शुभ उपलक्ष मे यह ला रहे हैं और यह संग्रहालय की बात है और यह स्वागत करने की चीज थी, इसलिये मै चाहता था कि इसकी जगह "रजत-जयन्ती वर्ष" इसमें रखा जाये।

दूसरा, श्रीमन्, यह है कि विक्टोरिया का जो स्मारक है यह हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा संग्रहालय है और आज भी, रजत-जयन्ती के वर्ष मे हम आ गये, लेकिन आज भी आजादी के रजत-जयन्ती वर्ष मे भी कांग्रेस की सरकार अपने को एक छोटे से देश इंगलैण्ड के साथ, उसके साम्राज्य के साथ बंधी हुई रखती है, मुझे लगता है कि उसके प्रतीक के कारण यह एक अपने ऊपर प्रभाव रखे हुए है और उसके कारण आप संग्रहालय के विदेशी नाम को बदलने मे असमर्थ पाते हैं। श्रीमन्, इस रजत-जयन्ती के अवसर पर जो संशोधन आप ला रहे थे उस संशोधन का विरोध तो आवश्यक नही है; क्योंकि आवश्यक लोगों को लेना भी जरूरी था। लेकिन इस अवसर पर हमारे माननीय मंत्री महोदय को यह दिखायी नही पड़ा कि अभी भी इस विक्टोरिया शब्द, गुलामी के प्रतीक का एक शब्द हमारे इस विशाल, पुरातन और सांस्कृतिक देश के

नाम से जुड़ा हुआ है। मैंने महारानी लक्ष्मीबाई का नाम उसकी जगह पर दिया था अपने सशोधन मे, लेकिन अगर उसको भी नही रखते तो राजा राम मोहन राय का नाम हो सकता है। एक सुनहरा अवसर आप को मिला था कि आप विक्टोरिया की जगह अपने प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का नाम ही रख देते। इसका नाम इन्दिरा मेमोरियल होता तो कम से कम हम विरोधी भले हो, लेकिन हमारे देश के प्रधान मत्री का नाम होना देश के स्वाभिमान तथा गौरव की बात होती। लेकिन पता नही, आपका इस पर क्यों नही ध्यान गया। आपको इस पर देश के हिसाब से भी, पार्टी के हिसाब से भी और व्यक्तिगत हिसाब से भी विचार करना चाहिए। मैं तो पुनः आपसे निवेदन करूंगा कि सचमुच मे रजत-जयती के वर्ष मे इस एक शुभ काम को आप करे तो जो हिन्दुस्तान के एक बहुत बड़े शहर मे, कास्मोपोलिटिन टाऊन में जो सबसे बड़ा संग्रहालय एशिया मे होगा जिसका नाम अंग्रेजी साम्राज्यवाद के नाम पर है और जो हमारे देश मे गुलामी का प्रतीक शब्द है, उसको बदलने के बारे मे गंभीरतापूर्वक विचार करें कि क्या मंत्री महोदय इसमे आमूल चूल परिवर्तन कर सकते है या नही।

श्रीमन्, इस सबध मे मै एक-दो बाते आपके सामने रखना चाहता हू। श्रीमन्, इन्होंने राष्ट्रपति का नाम निकालने की कोशिश की है। अब तक वहा के अधिकारी राष्ट्रपति महोदय थे तो कम से कम लोगो को एक भरोसा था। इसमें नामांकन की बात कही है, तो नामाकन की बात जब भी होती है तो विशेषताओं की बात होती है या ऐसे शब्द दिए जाते है जिसका प्रतिनिधित्व चुनाव आदि के द्वारा न हो सके। लेकिन हम देखते आ रहे है चाहे वह नगरपालिका के नामाकन से शुरू हो, चाहे बड़ी-बड़ी पब्लिक अंडरटेकिंग्स मे हो—वहां क्या हो रहा है? आज ही श्रीमन्, एक बात निकली कि यात्रियो की सुविधा के लिए एक ससदीय समिति जाच के लिए बनाई गई और जब मैंने पूछा उस समिति मे कौन-कौन है तो पता लगा, मात्र काग्रेस के 4 लोग है। मुझे ऐसा लगा शायद प्रजातन्त्र हिन्दुस्तान मे समाप्त हो गया, प्रजातत्री पद्धति अब समाप्त हो गई है। अब एक पार्टी का एकतन्त्रवादी राज्य हो गया। अब कोई आवश्यकता नही रह गई किसी दूसरे दल की ताकि दूसरे लोग भी अपने अच्छे विचार सरकार को दे सके, जिससे सरकार और देश की भलाई हो। मुझे लगता है वैसा ही अधिकार हमारे माननीय मत्री महोदय इस सशोधन मे भी लाना चाहते है। इसीलिए मैंने सशोधन में भी रखा था कि जिस तरह का है उसी तरह का रखा जाए। यह सरकार अपनी अधिकार-लिप्सा के कारण इसमे परिवर्तन कर रही है। मैं यह परिवर्तन जिसमे आप यह चाहते है कि विशेषतः और अच्छे जानकार सग्रहालयो के इतिहासकार इत्यादि को रखा जाए, इसका स्वागत करता हू। सग्रहालय में सचमुच मे ऐसे लोगों की आवश्यकता है। लेकिन दुःख इस बात का है, जहा पर आप सग्रहालय की बात करते है एक छोटी सी बात आप इसमें लाएं, परन्तु अभी जो देश में पुरातत्व से सम्बन्धित विशेषकर जो पुरानी मूर्तिया अपने देश मे हजारो नही लाखों की सख्या में चुरा ली गई और इस चीज को रोकने के लिए आपने कुछ कानून बनाए है, लेकिन कानूनों से कोई भी कारगर कदम नही उठाया जा सका। श्रीमन्, मैं एक गाव का रहने वाला हूं, गांवो में किसी पेड़ के नीचे या किसी अन्य इम्पार्टेन्ट प्लेसेज पर बहुत सी मूर्तिया और कलाकृतियां देवी-देवता के नाम से सुरक्षित है, लेकिन इस दिशा मे पहले भी बहुत कीमती पुरातत्व की मूर्तिया चोरी चली गई और हमारी सरकार आज इन मूर्तियों को बचाने में असहाय दिखाई देती है। जिस प्रकार से आज देश में देवी-देवताओं का महत्व घटता जा रहा है—उसी तरह से इन मूर्तियों की सुरक्षा का प्रश्न भी घटता जा रहा है। जिस चीज को सरकार को लाना चाहिये था उसको सरकार नही लाई, जिसका नतीजा यह हुआ कि हमारे देश से बड़ी मूर्तिया चोरी होकर विदेशों को चली गई और जा रही है। इस तरह को जो मूर्तिया विदेशों में चोरी होकर जा रही है उसमें अपने देश के लोगो का भी सहयोग है। इसलिए आपका जो कानून है वह कारगर नही हो सका है। मैं आपसे यह निवेदन करता

[श्री जगदम्बी प्रसाद यादव]

चाहता हूं कि अगर आप इस बिल को पास कराना ही चाहते है, तो मैंने जो सशोधन दिया है उसको आप को मान लेना चाहिये जो कि आज के अवसर पर उचित है। आप उस तरह की बात नही कर रहे है, जिससे इस बिल का फिर कोई महत्व नही रह जाता है।

आज सवेरे ही पब्लिक अन्डटेकिग्स के बारे मे जो चर्चा हुई, जिन अन्डरटेकिग्स में जनता का करोड़ो रुपया लगा हुआ है, उनके चेयरमैन की नियुक्ति का जब सवाल उठाया गया, तो मत्री जी ने कहा कि इसमें क्लासिफिकेशन की कोई जरूरत नही है। आज सचमुच मे किसी योग्यता की आवश्यकता है तो वह यह है कि वह व्यक्ति चुनाव मे हारा हो, दूसरी योग्यता यह होगी कि उसका काग्रेस पार्टी में अच्छा स्थान हो। अब सरकार की यह कोशिश हो रही है कि इस तरह के जो संग्रहालय है उनमे भी अपनी पार्टी के कुछ लोगों को शरण दी जाय और इसी वजह से मैंने इसका विरोध किया था। बाकी इसमें जो आपने इतिहासकार, कला इतिहासकार और दूसरे विद्वान लोगों को लाना चाहते है, उसका मै स्वागत करता हूं।

श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत (राजस्थान): उप सभापति जी, यह बिल हमारे सामने आया है, इसकी मुझे खुशी है और इस बात की भी खुशी है कि हमारी मिनिस्ट्री का ध्यान इस ओर गया, लेकिन इसके साथ ही साथ मुझे सख्त शिकायत भी है म्यूजियम को लेकर पहली शिकायत यह है कि हम आज रजत जयंती के अवसर पर इस तरह का बिल लाकर अमेन्ड करने जा रहे है जो विक्टोरिया के नाम पर है। क्या इस बिल को पेश करते हुए मत्री जी ने इस बात की ओर ध्यान नही दिया कि यह जो विक्टोरिया मैमोरियल है वह हमारी गुलामी की एक निशानी है और उस गुलामी के मैमोरियल का बिल आज मत्री जी पेश कर रहे है।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव: दोनो तरफ से सुधार होना चाहिये।

श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत: आप बीच में न बोलें और मै स्वंय ही अपने विचार रखने में समर्थ हू।

उपसभापति जी, मैंने एक अमेन्डमेंट रखा था और उसमें मैंने सुझाव दिया था कि इस "विक्टोरिया मैमोरियल" का नाम "राममोहन राय" मैमोरियल रख दिया जाय, लेकिन मुझे यह बतलाया गया कि वह इस स्कोप मे नहीं आता है, इसलिए नही रखा गया है। मै आपके जरिये मंत्री जी से निवेदन करना चाहती हूँ कि आज इस बिल पर विचार न किया जाय और इस बिल को दो दिन बाद या हफ्ते के बाद लाया जाय ताकि यह नाम हटा कर हमारे देश के राष्ट्रीय व्यक्तियो का नाम रखा जाय।

मैं आपका विशेष समय न लेकर संग्रहालय के बारे में एक दो विशेष बातें मंत्री जी के सामने रखना चाहती हूँ और उनका ध्यान इस ओर आकर्षित कराना चाहती हूं। आज डैमोक्रेसी के युग मे म्यूजियम का अपना एक रोल होता है और म्युजिम के द्वारा हम आम जनता को शिक्षित कर सकते हैं। आज हमारे देश मे ज्यादातर लोग अशिक्षित है, पढ़े-लिखे कम हैं, वहां पर म्यूजियम शिक्षा के लिए एक बहुत बड़े साधन हो सकते हैं और होने भी चाहिये। लेकिन मुझे अफसोस है कि हमारे म्यूजियम इस दिशा मे काम नही कर पा रहे है। न तो वे शिक्षा के लिए कुछ कर पा रहे है और न उनके द्वारा किसी प्रकार का रिसर्च का काम ही हो रहा है। जब हम दुनिया के दूसरे हिस्सों में देखते है तो पाते है कि वहां पर जो म्यूजियम होते है, नाना-प्रकार के म्यूजियम होते है, वहां उनके द्वारा तरह-तरह के कार्य लिये जाते हैं। हमारे यहा जो एक दो हिस्टोरिकल म्यूजियम हैं उन्होंने हमारे देश के लिए कोई काम नही किया है। हमारे यहा इंडस्ट्रियल म्यूजियम, चिलड्रन म्यूजियम और इसी तरह से दूसरे म्यूजियम होने चाहियें, लेकिन हम आज इनमें बहुत पीछे है। खैर, उनको जाने दे, जो हमारे पास म्यूजिम है, उनकी स्थिति पर भी हम गौर करें तो हमें निराशा होती है। म्यूजियम को किस तरह से रखा जा रहा है उनमे कोई आकर्षण नही है। जब हम विक्टोरिया मैमोरियल म्यूजियम को देखते है तो वहां न कोई गाइड बुक है, देखने के लिए लोग आते है, गैलरियो का चक्कर लगाते है और जिस तरह वहा पत्थर जैसी निर्जीव चीजे पड़ी हुई है वैसी ही निर्जीव नजर से ही लोग देख लिया करते हैं। इसका कारण यह

है कि डिस्प्ले ठीक ढग से नही किया गया है, गाइड बुक नही है। उसको आकर्षण बनाने के लिए चेष्टा ही नही की गई। यह मैं केवल विक्टोरिया मैमोरियल के बारे में नही कह रही हू, यह मै भारत के सारे म्यूजियम्स को लेकर कह रही हू। हमारे म्यूजियम्स को इस प्रकार रखा जाय कि वे बच्चो के लिए आकर्षण केन्द्र बन सकें, मन्दिर की तरह बन सकें और हमारी लाखों लाखजनता उन्हें देख कर शिक्षा ग्रहण कर सके। जैसे कलकत्ते का म्यूजियम है, वहा दर्शको की औसत संख्या 5 लाख सालाना है। अगर इन म्यूजियम्स के द्वारा हम अच्छी शिक्षा का इन्तजाम कर सके तो हम लाखो नही करोडों लोगो को डेमोक्रेटिक ढंग से शिक्षा दे सकगे।

उपसभापति महोदय, आपके द्वारा मै माननीय मंत्री जी से जानना चाहती हूं, आपने हमारे देश का दुर्लभ खजाना जो है उसको किस तरह से और कैसे लोगो के हाथ में छोड़ रखा है। हमारे म्यूजियम्स को आपने ऐसे आदमियो को सौंप रखा है, ऐसी प्राइवेट पार्टी को दे रखा है जो न उनकी कद्र कर सकती है और न उनको ठीक तरह से सम्भाल सकती हैं। इसी तरह का एक म्यूजियम है हमारे जयपुर में जहां अप्राप्य, दुर्लभ और अलभ्य वस्तुएं हैं, लेकिन उनका संचालन आज न किसी सिस्टेमेटिक तरीके से हो रहा है और न सांइटिफिक ढंग से वह रखा जा रहा है और न ही वहां पर एसीटेशन या लेमीनेशन किया जाता है। वहां पर सामग्री क्या है, यह, महोदय, मैं आपकी जानकारी के लिये कहना चाहती हूं। वह म्यूजियम जिस पर गौर नही किया जा रहा है, सिटी पैलेस म्यूजियम या चन्द्र निवास म्यूजियम कहलाता है, वहां आपके हम्जानामा की पेंटिग्स है। हम्जानामा हुमायूं के वक्त मे शुरू किया गया था और अकबर के वक्त मे खत्म किया गया था। उसकी 1140 पेंटिग्स बनाई गई थी, लेकिन आज हिन्दुस्तान में दो बाकी बची है। वे अलभ्य चित्र हिन्दुस्तान से बाहर चले गये हैं, वे इसी तरह से वहां पर महाभारत का अनुवाद है जिसको अकबर ने अबुल फजल से करवाया और उसको कहा जाता है रजबनामा। 1587 मे इसको बनाया गया है। आज उसमें 168 चित्र है और एक-एक चित्र की कीमत आंकी जाती है एक लाख रुपया। इसी तरह रामायण का अनुवाद है इसके अलावा जो हम्जानामा है मीर हम्ज के नाम से, जिसकी इस्टोरी मसिया में मशहूर है उसके जो चित्र रखे गये थे वे लाखो के मूल्य के है उसकी देख भाल ठीक ढग से नही की जाती है। आश्चर्य यह है कि जब यह म्यूजियम वहां पर बनाया गया तो सरकार और राजा के बीच यह तय किया गया था कि यह म्यूजियम नेशनल म्यूजियम रहेगा या इसको स्टेट की सरकार देखेगी। आज उस बात को 18 साल होने को आ गये, न उसे नेशनल म्यूजियम की तरह रखा जा रहा है और न उसे स्टेट देख रही है, *आज उसे एक फेमिलीके ट्रस्ट की देखरेख मे चलाया* जा रहा है। मुझे इस बात पर अफसोस है। मैंने इसके बारे मे सदन मे प्रश्न किये तो जो होम मिनिस्टर से उत्तर मिला वह अधूरा मिला। अधूरे उत्तर के ऊपर मैंने आधे घंटे का डिस्कशन मांगा, लेकिन आज तक उसके लिए कोई समय नहीं दिया गया है। तो मंत्री जी मैं आपका ध्यान दिलाना चाहूगी कि आज इस तरह के म्यूजियम है जहां साइंटिफिक ढंग से काम नही किया जा रहा है। जो यह अमूल्य सम्पत्ति है उस पर आप ध्यान दे। 4-5 दिन पहले बंगाल में किसी म्यूजियम के आर्ट ट्रेजर के नुकसान के बारे में हमने विचार किया था। इस नजर से आप उनको देखें।

मैं एक और अहम सवाल के ऊपर आपका ध्यान खीचना चाहूगी और वह है आरक्योलाजिकल विभाग में मूर्तियो और शिलाखण्डों की चोरियां। ये आए दिन बाहर जाते है। जिस तरह से मन्दिरों से मूर्तियों को उठाया जा रहा है वह एक रेट की तरह चल रहा है। हमारी अलभ्य वस्तुओं से शोभायमान हो रहा है वाशिंगटन का म्यूजियम, न्यूयार्क का म्यूजियम और दुनियां के दूसरे मुल्को का म्यूजियम। यह मैं जानना चाहती हूं कि आरक्योलाजी की जहां चीजें पड़ी हुई है वहां आपने चौकीदार लगा रखे हैं, बीहट जंगलों में, जहां पर बहुत ही घना जंगल है, वहां एक चौकीदार ऐसे बहुमूल्य खजाने की निगरानी पर रखा जाता है। आप बतायेंगे कि उस चौकीदार से कैसे सुरक्षा हो

[श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत]

सकती है जब कि कई चौकीदारों के खून हुए है और चोरियां हुई है ? मैं आपसे निवेदन करूंगी कि ऐसे जो हमारे आर्कलाजिकल इम्पार्टेंस स्थान जंगलो मे है, वहां से आप मूर्तियां उठवा लें और उनको जिला हैडक्वार्टर्स में रख दिया जाय या जहां आप उचित समझे वहां रख दिया जाय । हमको एक्सटेंड बेसिस चलाना चाहिये । यहां जो शिलाखंड और मूर्तियां नेशनल के स्टेट्स की है उनको रखा जाए । जिनकी एक प्रकार की कई मूर्तियां है उनको बाहर भेजा जाए और एक्सचेंज मे दूसरी वस्तुओं का आदान-प्रदान किया जाए । उस आदान-प्रदान से हमारे म्यूजियम की जो पावर्टी है वह दूर होगी और वे रिच होंगे बाहर की चीजें आने से ।

इसके साथ ही मैं एक सवाल पूछना चाहती हूं कि क्या सरकार इन मूर्तियों की स्मगलिंग करने को प्रोत्साहन नही देती है एक तरह से । म्यूजियम्स के लिये इस तरह की चीजों की खरीदारी होती है और उससे स्मगलिंग को प्रोत्साहन मिलता है । यदि किसी चित्र की खरीद होती है तो वह चित्र किसी के घर का होता है यदि कुछ हथियारों की खरीद होती है तो वे किसी के घर के होते है, लेकिन ये शिलाखंड मूर्तियां किसी घर मे नही हो सकती जब स्मगलिंग करने वाले व्यापारी है, वे कहते हैं कि जब सरकार स्वयं खरीदती है तब हमारे बेचने मे क्या हर्ज है । तो हमारे इस तरह के जो शिलाखंड और मूर्तियां है उनकी सुरक्षा का पूरा प्रबंध किया जाय, आज जो हमारा आर्ट ट्रेजर है उसको हम खोते जा रहे हैं । जो एक दुर्लभ वस्तु पहले निर्मित हो गई है वैसी वस्तु हम अपनी सारी ताकत लगा दे फिर भी नही बना सकते । करोडों रुपया खर्च करके भी हम वैसी वस्तु नहीं बना सकते । इसलिये पूरजोर शब्दों में मै आपसे कहूंगी आरक्योलाजिकल वस्तुओं की आप रक्षा कीजिए और प्राइवेट संग्रहालयों मे जो मूर्तियां आदि है उनको ले जाकर आप अपने संग्रहालयों मे रखिए । इसके साथ-साथ उन वस्तुओं के पर प्रिजर्वेशन पर साइंटिफिक और सिस्टमेटिक ढंग से ध्यान दिया जाना चाहिये, इस बिल का भी नाम आप मेहरबानी करके अवश्य बदल दे ।

SHRI KALYAN ROY (West Bengal) : I appreciate the late attempt on the part of the Education Minister to do something about the Victoria Memorial. I come from Calcutta and I know how many people go there every day. But at the same time I am extremely unhappy and distressed about certain things in the same manner as has been expressed by other hon. Members of this House.

Sir, as I went through the original Bill, I found that crores of rupees at that time were collected from the poor people of this country. For what? I thought that the Minister would express this in categorical terms. The money was collected to preserve this Museum in the memory of the lif and reign of Her Majesty Queen Victoria. Is it the purpose and aim of the present Government of India i.e. to perpetuate the memory of Queen Victoria and her reign in this country? Was her reign so glorious and so famous in the annals of Indian history? Is it a kind of age of which we are very proud? Have we forgotten the massacre of thousands of people in the first War of Independence? Have we forgotten the devastating manmade famine which crippled the Indian economy for all time to come? Have we forgotten the very calculated drain of Indian resources at that time? To me—I do not know whether it menas the same thing to the hon. Education Minister - it was an age of sordid imperialism. To me it was a ghastly period of exploitation and barbarities. To keep today that Museum with the statue of that fat Queen sitting in front of the building is a source of utter shame. I will say, Sir, that it is a black spot on the face of Calcutta and I have also seen how some of the British and American tourists take photographs and each time they photograph, I feel repulsive. .. (*Interruptions*). . . I am not taking the violent means which you are asking me to adopt. I am only asking this : Don't you find that there is a contradiction in your approach ? You have removed the statues of those Commanders-in-Chief of the Indian Army, the white men who

ruled India, from almost all the places, from the Calcutta Maidan, from Chowringhee and other places. You have removed all of them. Then, why do you keep this? Was she better than the others? Most of the statues have been removed—the statue of George V and all others. Then, why do you preserve this? What is the intention? Do you want to teach our Indian children and students the 'glorious' part she played? I do not understand. If you had kept them, you can keep this also. But, you have removed all of them. Sir, you have been abroad much more than myself. You know how the French, the Italians, the Germans, the Soviets, and others systematically removed all that was part of the dark period of their respective histories in order to give a new spirit to their people, in order to create a new spirit among the people and you know how people are taken to those places where the fight took place between their forces and the forces of the imperialists. You know that students are taken to Stalingrad, Leningrad, Moscow, etc. so that they know what happened there. That is how they develop the spirit of independence amongst their people. By keeping the statue of Queen Victoria there permanently, for all time to come, you are not only creating a different spirit, a spirit of slavishness, but you are also killing the spirit of independence and I must say, Sir, with all humility that you are insulting the martyrs of this country. What a shame it is to Calcutta! I say this, because in Calcutta there have been more martyrs than anywhere in India, where the greatest sons of the soil, the fighters, have perished in jail, where more people have been shot down in armed clashes in the streets in the regime of the British imperialists. But, Sir, you will be surprised to hear that there is not a single museum to preserve anything of those people! There is not a single museum where their letters can be preserved, the famous letter they wrote and there is not a single museum to preserve the letters of Rabindranath Tagore to those martyrs or their revolvers or their other old belongings! All have either been lost or are now rotting in the Lal Bazar Police Station. This is your attitude to those freedom fighters whose labour has brought you the fruits which you are enjoying today. Why do you go out of your way to please the worst oppressor today when we are celebrating the 25th anniversary of our independence? This is a wrong attitude and this is a killing attitude and this is a slavish attitude. By this attitude you don't even inspire the Asians and Africans who come to this country. I have talked to the Africans who come to Calcutta and also to people from the Latin American countries. They ask why we are keeping the statue of Queen Victoria while they have removed all the relics of the spanish empire in Latin America. The Africans say that they have removed all the remnants of the Spanish, Portuguese and the British imperialism from the soil of Africa and then ask how we talk about independence, the new world, the third world, the new spirit, the new Asia and what not and yet preserve the statue of that lady during whose regim more people have been shot all over the world. This is a very wrong attitude and a very insulting attitude.

DR. Z. A. AHMAD (Uttar Pradesh) : Deplorable.

SHRI KALYAN ROY : Yes, I do not find proper word in the English language to express my indignation. Not only that, Sir. I do not know whether the honourable Minister has visited that Museum lately. I go there very often. Have you seen the manner in which it is maintained? Some of the very good paintings depict the Battle of Plassey and, I think, the surrender of Mir Jaffar to Clive. What is the state of those paintings? They are all falling apart. How has it been maintained? The only place that is maintained is only the outside.

[Shri Kalyan Roy.]

The interior is very, very ghastly. Nobody is there to look after that. The people there are rotten, with absolutely no interest and experience in the whole thing.

The first thing you do before you appoint some people, is to try to maintain what is there *minus* this statute of the fat lady, *minus* that name which stings, and extend it so that a part of it can be utilized for those who have perished in our struggle for freedom. If you consider that, a part of that museum will be utilized for all types of movements — movement of the peasant, movement of Santhals, terrorist period, the periods in 1930's and 1940's; there should be a collection of all documents, books, letters regarding the Battle of Plassey (1757), the First War of Independence (1857), the Indo Revolution, then the period of terrorist movement (1910), and so on. You can honour Raja Ram Mohan Roy, Rabindra Nath Tagore, C.R. Das, Jatin Das, Surja Sen who perished at the gallows — there is no dearth of names in Bengal; I can tell you that. This should be properly preserved. The paintings should be maintained, properly and a knew look should be given to that - not the imperialistic look which hangs on today —a new look which inspires, where I can take students and say, "Look, this is how to fight for independence and how to preserve freedom". This is what the intention and the spirit of the Government should be. I want to repeat it again. So, the entire approach is wrong. And it is high time that you go into this matter deeply. You want to devote this museum for those periods for which you have nothing but shame ! The Government of India is equally guilty of neglecting our historical fights and struggles for freedom. You can step in where the State Government have failed.

I would also request you to enquire how many original paintings have been stolen. I was told that the 'paintings of Ravi Varma of the south, are not there anymore. A new catalogue should be brought out. What about the outside paintings? What about the maintenance?

I think we should not be proud of the life and reign of Queen Victoria any more, and the name of the building should be immediately changed. It should be properly maintained and a new look should be given to that part where thousands of people come every day and which attracts people from outside.

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदय, मुझे इस बात का दु:ख है कि एक भले मिनिस्टर को एक बुरा विधेयक पेश करने के लिये कहा गया। यह प्रो० नुरूल साहब के जिम्मे आ गया कि ऐसा विधेयक उन्होंने पेश किया और यह विधेयक है : विक्टोरिया स्मारक विधेयक।

अब इस पर आप गौर करें श्रीमन्, कि स्मारक किसका बनना है और कौन बनाता है। राम का स्मारक राम की सतानों ने बनाया, गांधी का स्मारक गाधी की सताने बनाती है। यह विक्टोरिया का स्मारक कौन कायम रखे चला आ रहा है? ज़ाहिर है कि ये जो विक्टोरिया की सताने है, जो अंग्रेजों की सताने है वे अंग्रेजी और अंग्रेजियत को हिन्दुस्तान मे कायम रखे हैं। अगर आज की सरकारें गाधी जी की सताने होती तो विक्टोरिया का स्मारक कायम रखने की बात कभी नही सोचते। आज देश में अंग्रेजी और अंग्रेजियत को विक्टोरिया का स्मारक रखने वाली विक्टोरिया की संताने ही कायम रखी है और कायम रखेगी। गाधी की सताने या सुभाष की सतानें या वे लाखो जिन्होंने इस देश को आज़ाद कराने के लिए कुर्बानिया दी और जिनकी कुर्बानिया की वजह से आज ये गद्दियो मे बैठे हुए है, उनकी सताने कभी यह स्मारक की बात नही सोच सकती है। तो श्रीमन्, मै यह कहना चाहूंगा कि आज इस देश में विक्टोरिया और लार्ड मैकाले की सताने अंग्रेजी और अंग्रेजियत को कायम रखे हुए है। उसी का एक अंग आज इस सदन के सामने पेश है—विक्टोरिया स्मारक विधेयक स्मारक किसका बनता

है क्यो बनता है, क्यों कायम रखा जाता है? जो किसी जाति के लिए, राष्ट्र के लिए, भूभाग के लिए उद्धार का काम करता है, अच्छा काम करता है, उसका स्मारक उसकी सताने बनाती हैं, उसके स्मारक को उसकी संताने रखती है। विक्टोरिया का स्मारक, आज भारत की आज़ादी के 25वें वर्ष मे कायम रखने के लिए यह विधेयक पेश किया गया है। अब भी मत्री जी को सुबुद्धि आए तो इस विधेयक को वापस ले और इस पर विचार करे कि विक्टोरिया से सबधित जितनी चीजें हैं, वे स्मारक के रूप मे नही बल्कि इतिहास के काले पन्ने के रूप मे रहनी चाहिए, विक्टोरिया का युग भारत के लिए अधकार का युग था, लेकिन आज सत्ता दल में जो लोग है वे विक्टोरिया को हटा कर, महारानी विक्टोरिया के स्थान पर, उनके शासन और सत्ता को ललकारने वाली महारानी लक्ष्मीबाई झांसी का स्मारक बनाने की बात नही सोचते। वे आज भी विक्टोरिया स्मारक को ही कायम रखना चाहते है। (Interruption) आप जाकर कलकत्ता के मैदान में देखिए जहा विक्टोरिया का स्मारक है, जहां विक्टोरिया की मूर्तिया हैं। आपको शर्म इस बात पर नही आती कि जितने अंग्रेजों के स्मारक हटाए गए है, वे सारे स्मारक सोशलिस्ट पार्टी के नौजवानों ने तोडे है।

श्री कल्याण चन्द (उत्तर प्रदश) : आप यही काम कर सकते है।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : आपकी गवर्नमेट उनको हटाने की बात कभी नहीं सोचती। आपके पार्लियामेन्ट के सामने की मूर्ति हथौडी से तोडी गई है, तब जाकर हटाई गई। आपको कभी शर्म आएगी आप क्या कर रहे है, इस पर कभी ग़ौर करते हैं कि आखिर हिन्दुस्तान आज आजाद है, लेकिन आप लार्ड मैकाले के रास्ते पर चल रहे हैं। आप लार्ड मैकाले के रास्ते चलेगे या गाधी के रास्ते चलेंगे? गाधी जी ने क्या कहा अग्रेजी के बारे मे? गांधी ने कहा अग्रेजी हिन्दुस्तानियो को हमेशा के लिए गुलाम बनाए रखने के लिए हिन्दुस्तान में कायम की गई है। "हरिजन" के पन्नो को आप पढ़िए एक बार नही हजारों बार लिखा गाधी ने अग्रेजी के ऊपर...

श्री कल्याण चन्द : गांधी नहीं, गांधी जी कहिए।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : आप तो "जी"-इन्दिरा जी फलाना जी सोचते है। आपकी बुद्धि वही तक सीमित है।

श्री कल्याण चन्द : जो चाहें सो कहें।

3 P. M.

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : तो मैं श्रीमन्, आपके माध्यम से शिक्षा मत्री जी से निवेदन करूगा कि वे अब भी इस बात पर विचार करें। अगर वे हमारी इस बात पर विचार नही करते है तो विक्टोरिया शासन के जितने भी हिमायती थे, अमीचन्द जैसे, उन सबकी मूर्तियां कलकत्ते में बना दी जानी चाहियें, जिन्होंने बंगाल में अग्रेजों की हकूमत को लाने में सहयोग दिया था। इस तरह के जितने गद्दार हैं उनका स्मारक कम से कम इस सरकार को बनाना चाहिये।

श्रीमन्, मै यह निवेदन करना चाहता हूं कि आजादी के 25वे वर्ष के अवसर पर, जिसे हम आज रात 12 बजे बनाने जा रहे है, कम से कम इतना तो फैसला करते कि देश में जो गुलामी के चिह्न बाकी रह गये है, उनको हटा दिया जायेगा। आज हम इतना ही फैसला करते ताकि यहा के नौजवानों मे उत्साह पैदा होता, देश के विद्यार्थियों मे उत्साह पैदा होता और उनमें एक नई उमग पैदा होती। आज हम 12 बजे रात आजादी का दिवस मनाने जा रहे है और उसके पहले दिन के तीन बजे इस तरह का विधेयक पास कर रहे है।

जहा तक इस बिल के उद्देश्यो और कारणो में यह बतलाया गया है कि विक्टोरिया स्मारक में उन लोगो को नियुक्त करना है जो अपनी शैक्षणिक या व्यावसायिक पृष्ठभूमि तथा विक्टोरिया स्मारक में रखे हुए प्रदेशो के अपने विशेष ज्ञान के कारण इस प्रकार नियुक्ति के लिए उपयुक्त है। आज जो सरकार की निगाह मे उपयुक्त हैं, उन्हें ही वह उपयुक्त मानती है। आज जब कि इस तरह का समय था कि इस तरह के जो न्यास है, उन्हे समाप्त किया जाय, लेकिन सरकार इस तरफ का बिल लाकर इस तरह के न्यासो को कायम रखना

[श्री नागेश्वर प्रसाद शाही]

चाहती है ताकि वह उनमे अपने लोगों को नियुक्त कर सके। हमारे साथी ने अभी बतलाया कि इस तरह का जो न्यास स्थापित किया गया है, वह भारत की जनता से जबरदस्ती करोड़ो रुपया वसूल करके स्थापित किया गया है, ताकि इस देश में विक्टोरिया महारानी की यादगार बनाई रखी जा सके, उनके साम्राज्य की यादगार को बनाया रखा जा सके। क्या आज आजादी के इतने वर्षो के बाद भी अंग्रेजो के जाने के बाद भी हम यह बात नही सोच सकते है कि ऐसे न्यासो का धन हम गरीबो के लिए, अस्पताल बनाने के लिए, गरीब विद्यार्थियो को वजीफा देने के लिए, महिलाओं को शिक्षा देने के लिए तथा उनमें प्रगति लाने के लिए किया जाए? क्या यह भी कही लिखा है कि ऐसे न्यासो के धन का उपयोग किसी दूसरे अच्छे कामों में न किया जाए? भारत की गरीब जनता से जबरदस्ती रुपया वसूल करके जिस विक्टोरिया रानी का मैमोरियल यहा पर बनाया गया था, उस स्मारक को आप आज कायम रखना चाहते है। मैं यह कहना चाहता हूं कि क्या आपकी बुद्धि मे यह बात नही आती है कि भारतीयों के इस धन का उपयोग भारतीय जनता की भलाई के लिए किया जाय?

श्रीमन्, इस बात को भी स्वीकार करना चाहिये कि जब विदेशी कलकत्ते आते है और कलकत्ते के मैदान में इस खूबसूरत मूर्ति की तस्वीर खींचते है, तो वे सोचते है कि आज भी किस तरह से हिन्दुस्तान के लोगों का दिमाग गुलामी से जकड़ा हुआ है।

श्री महावीर त्यागी (उत्तर प्रदेश) . वह तस्वीर इस बात में भी सहायता करती है कि हिन्दुस्तानी यह अनुभव करे कि इसके राज को हमने गिराया था और इस पर हमने विक्टरी पाई थी।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : यह तो त्यागी जी आप ही सोच सकते है। आप एक रावण का भी मन्दिर बनवा ले, रावण के खानदान वाले रावण का भी मन्दिर बनवा ले। तो मै कह रहा था कि जो विदेशी आते हैं और कलकत्ते के मैदान से विक्टोरिया की तस्वीर खींच कर ले जाते हैं उनके दिमाग पर क्या असर पड़ता है। श्रीमन, यह कहना चाहता हूं कि मंत्री महोदय इस विधेयक को वापस लेकर इस न्यास को दूसरे काम में लगाने का विधेयक लेकर आएं ताकि इस न्यास का धन देश के कल्याण के काम में लगाया जा सके।

इस विधेयक के उद्देश्यों में यह भी है कि "भारत के राष्ट्रपति के स्थान पर भार साधक मंत्री को न्यासी बनाने के लिए विधेयक लाया गया है"। हमारा खयाल है कि राष्ट्रपति ही न्यासी रहे; क्योंकि नूरुल साहब तो कभी कभी देशी भाषा भी बोल लेते हैं। और आज जो जलसा होगा 12 बजे रात को उसके सम्बन्ध में हम लोगों ने कोशिश की, राष्ट्रपति महोदय को चिट्ठी लिखी कि आप भारतीय भाषा में सम्बोधन करें, मगर वे अंग्रेजी में ही सम्बोधन करने पर अडिग हैं। तो जब उनको इतना प्रेम है रानी विक्टोरिया की भाषा से तो रानी विक्टोरिया के स्मारक के न्यास में मंत्री महोदय के बदले वही न्यासी रहें तो ज्यादा अच्छा है। राष्ट्रपति महोदय ज्यादा नजदीक है इस न्यास से, इस न्यास के उद्देश्यों के ज्यादा नजदीक हैं, महारानी विक्टोरिया का स्मारक और लार्ड मैकाले की भाषा को इस देश में कायम रखने मे बड़ी रुचि रखते हैं, इसलिए अच्छा यह होता . .

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT. (SHRI OM MEHTA) : Sir, he should not mention anything about the President.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Please do not bring in the President.

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : इसमें लिखा हुआ है कि भार साधक मंत्री को राष्ट्रपति के स्थान पर न्यासी बनाया जाय। तो मैं यह निवेदन कर रहा हूं कि राष्ट्रपति को ही, जो अंग्रेजी भाषा के बड़े प्रेमी हैं...

श्री उपसभापति : आप राष्ट्रपति जी के बारे मे जिक्र न करिए।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : मै राष्ट्रपति के बारे में नहीं कह रहा हूं। इसमें लिखा हुआ है कि राष्ट्रपति को हटा कर मत्री को रखा जाये। उसमें मेरा संशोधन है। इसमें लिखा है कि राष्ट्रपति को हटा कर न्यासी मंत्री को बनाया जाय, इसलिए मै कह रहा हूं कि आज जो परिस्थिति है उसमे जो अंग्रेजी और अंग्रेजियत से मुहब्बत रखता हो उसे न्यास में रखा जाये।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : राष्ट्रभाषा कमेटी की बैठक में भी नूरुल साहब अंग्रेजी बोलते है।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : जनसंघ वालो ऐसा तो न कहो, नूरुल साहब के बारे में ऐसा मत कहो।

DR. R.K. CHAKRABARTI (West Bengal) : Now you are speaking in Hindi and I do not understand Hindi. Suppose the Rashtrapati does not know Hindi and he speaks in languages other than in Hindi, then are you going to have so many interpreters to translate it?

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : मैं हिन्दी की बात नहीं कर रहा हूं, मैं भारतीय भाषाओं की बात कर रहा हूं। तो मैं कह रहा था कि राष्ट्रपति का ही नाम यहां रहे तो ज्यादा अच्छा होगा, क्योंकि उन्हें अंग्रेजी से बड़ा प्रेम है।

PROF. S. NURUL HASAN : Sir, the most important point that has been raised is about the name of the Bill and the title of the Bill. I share the anguish which the hon. Members from both sides have expressed and I am giving this matter consideration. *Prima facie* there are certain difficulties because Victoria Memorial appears in Entry No. 62 of List I of the Seventh Schedule of the Constitution. So, the matter will have to be examined. What Shri Kalyan Roy stated and what was also essentially stated by all other hon. Members is that the whole slant of this Museum has to be changed and it has to be a period Museum in which due place must be given to the struggle of the Indian people. Even if symbols of imperialism are kept, there should be suitable captions, so that they are symbols of imperialism. That is why it was felt that the present Board of Trustees perhaps may not be able to give this new stance to the Museum which we would all like to be given. Therefore, it was considered necessary straightway to bring forward this Bill, so that, with the aid of experts, it should be possible to give this new stance, which I am sure is not only the feeling of all sections of this House, but of all sections of this country. And I do not want to make it a point of controversy. I think many of my hon. friends would perhaps bear me out that my sentiments in this matter cannot be different and are not different from their own. I think hon. Members would agree that because of this major change which we want to bring about in the orientation, the responsibility should directly be faced by the Minister who is responsible to the two Houses of Parliament. Therefore, the Government decided that it might be better to do it in this particular manner.

Now, one point has been raised about our art treasures, their preservation and the manner in which art/treasure and pieces of sculpture are disappearing from the country. I have stated on earlier occasions that Government propose to bring before this House and the other House the antiquities Bill in which certain greater powers would be taken and remedial action would be taken. I hope to bring this Bill before this House in this very Session of Parliament, if I am given an opportunity to do so. The Government is deeply conscious of the lacunae and loopholes in the existing law and, therefore, I hope that, in view of the sentiments that have been expressed in the House, the new ill would be passed in this Session,

that the necessary preventive and remedial action in respect of thefts and disappearance of antiquities may be taken.

The point has been raised by the hon. Member, Shri Kalyan Roay, whether some of the paintings have disappeared. I do not know about it, but I will have an enquiry conducted as early as possible, as soon as this Bill becomes law. Otherwise, the Government have very little power. Under the Act it is the Board of Trustees and if there is a Board of Trustees including experts I have no doubt that the Board of Trustees would be able to have this enquiry conducted. It would be an expert enquiry to find out whether it is an original or a duplicate. That should not present any difficulties.

Regarding what my hon. friend, Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat, stated, I think when we present to this House the antiquities Bill, many of her points would be met I know there are certain other difficulties. I entirely agree with her that the City Palace Museum of Jaipur contains some priceless treasures and it would be our endeavour to see that they are properly preserved and protected.

(THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) in the Chair)

But we will have to see what can be done. It is at the moment a private museum but I will make enquiries from the Government of Rajasthan about the type of agreement that has been entered into between the former ruler of Jaipur and the Government to find out if there is anything which the Government of India can do in the matter. In the light of this I would request through you, Mr. Vice-Chairman, the House to accept this small Bill.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) : The question is :

"That the Bill further to amend the Victoria Memorial Act, 1903, be taken into consideration."

The motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) : We shall now take up clause by clause consideration of the Bill.

Clause 2—Amendment of section 2

SHRI J. P. YADAV : Sir, I move :

"That at page 1, lines 6 to 10 be *deleted.*"

श्रीमन्, माननीय मंत्री जी ने इस को बाई-पास करने के लिए कहा कि अगर मंत्री जी जिम्मेदारी लेंगे तो वह सदन की ही एक तरह से जिम्मेदारी होगी मै उन्हें स्मरण कराना चाहता हूं कि राष्ट्रपति महोदय के पास अनेक जिम्मेदारियां है और उन सबको यह सदन वहन करता है। वह जिम्मेदारिया राष्ट्रपति जी के नाम पर छोड़ नहीं दी जाती लेकिन मत्री महोदय ने यह नही बतलाया कि सरकार आज जहा पर उस को नामांकन करने का अधिकार दिया गया है वहा पर उस का किस प्रकार दुरुपयोग करती है। श्रीमन्, उन्होंने रजत जयंती वर्ष का लाभ नहीं लिया, इस का सदन को अफसोस है और रजत जयंती वर्ष को भी अफसोस होगा। जब भी इतिहास लिखा जायेगा और इस बात का जिक्र आयेगा कि हमारे सदन के राज्य मंत्री जी ने एक ऐसा विधेयक यहां पेश किया जिस को लंगडा विधेयक कह सकते है, हालांकि वे अपनी विद्वता से और अच्छा विधेयक यहां पर पेश कर सकते थे। इस सदन का सर्वसम्मति से विचार था कि अगर आप इस में जल्दी ही कराना चाहते थे तो सदन एक मिनट की देर किये बिना ही इस को पास करने को तैयार था आप केवल इस का नाम परिवर्तित कर लेते। ऐसा होने पर सदन को भी उसमें खुशी होती। लेकिन आप ने इसमें अपने अधिकार-क्षेत्र को बढ़ाने के सिवाय और कोई परिवर्तन नहीं किया है। मुझे पूरी जानकारी नही थी, लेकिन अन्य माननीय सदन के सदस्यो ने बताया कि न्यास के गठन मे आप उस के भीतर प्रवेश करना चाहते है।

श्राप को चाहिए था कि उस न्याम में श्रामूलचूल परिवर्तन कर के उस को श्राज के युग के श्रनुकूल बनाते। श्राप उस को विक्टोरिया युग के श्रनुकूल न बना कर उस को श्राज के युग के श्रनुकूल बनाते, लेकिन श्राप ने ऐसा नहीं किया। इस में मैं श्राप की श्रधिकार लेने की प्रवृत्ति का विरोध करता हूं श्रौर श्रपना संशोधन प्रस्तुत करता हूं।

The question was proposed.

PROF. S. NURUL HASAN : I am sorry I am unable to accept it for reasons already explained.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) : The question is :

"That at page 1, lines 6 to 10 be *deleted*."

The motion was negatived.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) : The question is :

"That clause 2 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 2 was added to the Bill.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) : Now Clause 1, the Enacting Formula and the Title.

श्री गदम्बी प्रसाद यादव: इसमें मेरा श्रमेंडमेंट है जो स्वीकार नही किया गया।

उपसभाध्यक्ष (श्री वी० बी० राजू) : इस समय उस के बारे में कुछ नही किया जा सकता।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : मेरा यही कहना है कि इस में मेरा सशोधन है।

Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

PROF. S. NURUL HASAN : Sir, I move :

"That the Bill be passed."

The question was put and the motion was adopted.

The Diplomatic Relations (Vienna Convention) Bill, 1972

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SURENDRA PAL SINGH) : Sir, I move :

"That the Bill to give effect to the Vienna Convention on Diplomatic Relations, 1961, and to provide for matters connected therewith, as passed by the Lok Sabha, be taken into consideration."

Sir, the purpose of this Bill is to give effect to the provisions of the Vienna Convention on Diplomatic Relations, 1961, to which India acceded on the 15th October, 1965, particularly those provisions which should be given effect to under our law. So far we have been implementing the provisions of the Vienna Convention on Diplomatic Relations dealing with matters like exemption from dues and taxes by taking action under different existing laws. There are notifications issued, for example, under the Customs Act, 1962 and the Income Tax Act, 1961 to exempt diplomatic missions and their members from duties and taxes. The provisions of the Convention regarding the immunity of missions and their personnel from local, civil and criminal jurisdiction are based on established international customs and have been respected by our Government and the Courts. The intention now is to provide in a single statute a statement of the relevant rules on the subject in terms of Articles of the Vienna Convention itself. The Bill sets out the relevant articles of the Vienna Convention in the Schedule and clause 2 of the Bill states that they will have the force of law in India.

As hon. Members are aware, the Vienna Convention on Diplomatic Relations was adopted by a plenipotentiary conference convened by the United Nations in 1961. India participated in that Conference, and is a party to the Convention since October,